इकाई 25 सामाजिक नीति और भारतीय प्रतिक्रिया

इक्कई की कपरेका 25.0 अंग्रह

25.0 प्रकृत

25.2 श्रीपनिवेशिक मीति निर्माण का इतिहास लेखन 25.3 श्रेषेजी की आर्टीयक सामाजिक सीति

अंग्रेज़ों की सारीघक सामाजिक नीति
सीमिनविशास सामाजिक सलक्षेप में बयानाव

25.4.1 mm prot 25.4.2 with gas 25.4.3 mm gas

25.5 अंग्रेजों की नीति और चारतीय प्रतिक्रिया: एक मृत्यांकन 25.6 सर्वातः

25.7 बीस प्रश्नों के उत्तर

25.0 उद्देश्य

इस इकाई को पहकर साथ जीपनिवेशिक सामाजिक सीति को प्रभावित करने काले सारकों की जाराकरी प्राप्त कर सकेंगे। इसे पढ़ने के बाद अरुप:

भारत में जंबेजों की आर्रीयक सामाजिक मीतियों का उल्लेख कर सकेंगे,

 भारतीय साथानिक प्रभावों में वंदेनों द्वारा लगातार किए गए साथक्षेप पर प्रवास वाल सब्देषे,

 बंधेकों की माध्यांकक मीतियों के प्रधान और भारतीय प्रतिक्रिया वर्ग विश्लेषण कर समित्रे।

25.1 प्रस्तावन

11 में राज्य के प्राप्ता में नामके के सामा में यूप में प्राप्त में में ने कर एतिया है। यह में प्राप्त में में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त में में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त में प्राप्त में में प्राप्त में में प्राप्त में में प्राप्त में

25.2 औपनिवेशिक नीति निर्माण का इतिहास नेखन

समाजिक कार्यकलाची में राज्य के हत्सक्षेत्र को समझने के लिए जीपनिवीशक मीति का अध्यक्त कार्यक्रमा है। आर्थिक अधेज प्रशासकों और आर. थी. उल जैसे मार्थीय राष्ट्रपारियों (त्रिकारोंने माता में अंदेवा की सीतियों पर दिल्लाी में) के विषया एक न्यूनी में बिलोधी में एक पड़ते कुछ विषया सामण में करते में बिला में भी में प्रमान में देखार में में मीतियों किया कमा के एक मात्रों मात्री के पान में मीतियार दिवार पान कीर पता भी मात्रीयार विवास पान कि मार कहा मात्री में मात्रीत मात्रीय में मात्राल मात्राल के स्वामक का स्वामक है। कहा में मात्री में प्रमान में मात्री मात्रीय मात्राल में मात्रीय मात्राल मात्राल में मात्राल मात्राल है। मात्राल में मात्राल मात्राल मात्राल मात्राल मात्राल मात्राल मात्राल में मात्राल मात्राल में मात्राल मात्राल मात्राल में मात्राल म

25.3 अंग्रेज़ों की आरंभिक सामाजिक नीति

"साधाजिक सीरे" के ताल ध्यान रिप्ता, परिवार, अपराधिक बांस, धामाविक स्तर, सामाजिक सचनाओं को इकटक करना और ऐमें ही कई प्रकर के तत्व प्रार्थिस होते हैं. दिकारों पांच्यान से भागित प्रमान के सामांत्रक जीवान में प्रमानोग विकास का स्वापन के और क्षणें निर्धात्रत किया जा सकता है। आपने महत्त्वस किया होता कि कथर हमने "नामाजिक नीति" का प्रयोग बहत अर्थों में फिल है और पूनमें से बहत ही बालें की जानकारी हम Booch record if over my wit if , we also see send if you wrothe conflict. शंस्थाओं के प्रीप्त क्षिटिश रिन्डांग पर उसान केंग्रित करेंगे, जिनकी ओर औपनिवेशिक पास के कारंच में ही अंत्रेज़ें और चारतीयों का ध्यान साक्**य ह**ता वा और इस संबंध में करा करावारी भी की गई थी। अक्षा क्या में प्रम विकार-विवार के केंद्र में बंगान का विवा हता है। बंधान भारत में कंपनी का महतालय था। इतपर तथारे पहले अंदेजों ने कथता कालपर और ग्रहां पर प्रकारत और राज्य सिंग संबंधी अनेत उपायों का प्रयोक किया । क्षणा में विश्वित प्रथम वर्ष भी संस्था वरेताकुर बीधक थी। इन्होंने सामाधिक सीति के प्रमुप्ते में प्रात्मपूर्ण गरिवज्ञ निभाई । सन्तक्ता में अंदेवों की अधिक तीनीश्रीकों और प्रकल कर्न के और प्राप्तकारण विराधा के प्रकार से प्रकार के ब्याचारिक और सांकारिक बीवन में एक बलवान ही बच गई। पढ़े-लिसे बंगानी विशिष्ट जन अंग्रेजों की नीतिसों पर सहित कर में बहुत जरने अने और अपनी प्रतिक्रिया सहका जरने तरे। इससे अमिरिका the even the fit felt years are do feathful we friend

मारत का पहले फार्नर जनरल गारेन हेरिएंगा एक अंदेजी "सरकारी जफनर तंत्र" कामम करना चारता वा. जिनकी धारतीय धागाओं पर अच्छी गरूड हो और जो चारतीय पारंपराओं को सामारि की । 1784 में वेडिटरा से बारासा दिवस कि "चिकार क्यें पासक करता है। उससे बारे में कोटी से फोटी जानवारी काल बरला और सामाधिक संपर्ध के माध्यम से तत्रकार प्रकारी करना, नामाना की विजय को समस्य करने की ओर एक बाते बढ़ा हजा करन होता है, यह राज्य के लिए नामरायक होता है, वह मानवता की उपलक्षित " वेरिकारण स्वापना का कि वर्ताच्याल स्वापनीय सामाओं को कीक से बीवल करत क्योंकि बार्क प्राप्त को सम्बाने और सामिनक करना से संपर्ध स्थापित करने में प्रका मिलेगी। इस उद्देश्य में उसने ऑक्सफोर्ट में फारसी मामा के प्रोपेश्वर पर एक यह निर्मित करने का प्रमाण तैयार फिला। भारत काने के पहले मिकिन मर्जिम के अधिकारियों को फारमी और विकासानी सीलने की घेरणा ही जाती थी। भाषा संबंधी प्रशिक्तन हेने का चैकता 1790 में तिया गया। पर तात्कारिक समाधान के रूप में बारेन डेडिटंका ने जन पर्वाराज्यां को बहाबा और प्रेरायात दिया. वो भारतीय कातत और विधिप्रकार संबंधी पंत्रों के अध्ययम और जनकार में स्वीच रकते थे। इस शरिविधि को पोल्सविस करने के िला कारता करने के एकज में अपनी रक्षम का प्राथमित रक्षा गया । अधेवीं से शंकाल कारत के प्रधानकीयान अध्यापन को एक विकार ही । बेरियांका के अंतरीन वैक्सिकेंक कैनेन के

 हिंदू पैति-निष्मार्थे और धार्षिक कानुनों को अनुष्टित और गंकीनत किया । १७३३ ई. में जाने मंगना भाषा का व्यावतम प्रकाहित करकाया ।

हेरियोण ने भारतीय क्याओं में कम्पनी के करावेशों को अनुता करने का प्रवान किया और इस प्रवान के कम्पनकर कमनामां में मूखा और क्यारान की राहक्ता हो। पाता के अमेरित और अपिकर परंपराओं के माने कियानी के निए एशियादिक स्मार्थाओं स्थापना हुई, हमझे स्थापना में बारेन हेरियोण का उम्मल हाथ था। वनकत्ता नदरवा की

स्थापना कर दिशा में विश्वा राज्य प्रमान कारम कर । हेरिटेण से सामय कात में अपनाई गई गांत्वृतिक और शामानिक नीति में पूर्वी संस्कृति की और अकार की स्वाट अनक मिनती है। इसे "ब्रिटिश जीवियेटीताक" की विचार प्रारा भी कर नकते हैं। यह बान आम में रखनी पाहिए कि यह बिचारवारा भारत में बिहिरा साबाज्य की जरूरतों को पत्त करने के लिए लाग की गई थी। किमी देश पर लंबे समय क्रम सामान करने के लिए और बार्स स्वाई संस्थाओं के निर्माण के लिए सामित देश की करना की प्रवर्तन जनके नामाजिक रिति-रिवाज आदमी और आनवनाओं के बारे में जानना बहुत शरूरी था। हेस्टिम बहुता या कि शामितों पर उनके तरीकों से ही शहूरूर किय बाए. व कि उनका बढ़ेबीकरण किया जाए। ये सारी बाने प्राच्याची अवधारणाओं और लिए गए राजनीतिक निश्रंमों से पूरी तरह स्पष्ट होती हैं। परिश्वर्थी मालाबार तट की हिन्द्रीत में सर्वाचित आर्राभक बिटिश सरकारी दस्तावेजों को देशने में वह बान और बी सामाया हो जाती है। उसमें स्थानीय मामाजिक प्रशाओं से प्रति यहाजभविषानं रूप जरनाया भारत दें अवस्थित के परिचार्की रिविन-दिवाओं से बिल्कम विकास के । अस्पारण के विकार समार की मामनतात्वक और बारपीताव जैसी प्रधाओं पर एक रिपोर्ट 18 में शताब्दी में तैयार की गई. पर इसमें उनकी निया नहीं भी गई और इसे नायर परलों के नैवाहिक संबंध से परिचाम के रूप में स्वाहवायित किया गया है । बाद में उन्तीतनी शतामी में इस निवाह पर्द्वति क्षेत्र व्याकतिक और नायर महिलाओं के बहर्यातत्व को "वेजधार्यात" और

"ধর্মীরক" করা যবা।

- क्षेत्र प्रश्न । 1) श्रीचनिवीराक नीति निर्धारण ने संबद्ध प्रतिहास लेखन की व्हेन-व्हेन ही विश्वन्य प्रवन्तिक की रे प्रवास कार्यों है उत्तर सिक्षा ।
 -
- क्रमेंस सेंग्रनक के जातन जान के क्रोप्रों की सांत्र्यनिक और सावाधिक सींत क्या

बी ? का परिवर्धों में उत्तर वीजिए।

25.4 औपनिवेशिक सामाजिक हस्तक्षेप में बदलाव

होरिया का राज्य काण काण काण होने के का गांचा ता ताबार की दिवारों की एरियोंकर में पंचान कर पार्टिक की एरिया की एरिया की एरिया की एरिया है। प्राथमिं की कार्याण की परिकार की प्राथमिं स्वास्त्र में है अपित की एरिया की एरिया की प्राथमिं की कार्याण की परिकार स्वास्त्र में है अपित की एरिया की प्राथम की प्रथम की पार्टिया की प्रथम की पार्टिया की प्रथम की एरिया की प्रथम की पार्टिया की प्रथम की पार्टिया की प्रथम की पार्टिया की प्रथम की एरिया की पार्टिया की प्रथम की पार्टिया की प्रथम की एरिया की पार्टिया की पार्ट

या सबती है। ये पिषार उपयोक्तामारी विचारतार पर आसरित है। इन विचारताराओं ने नीति निर्धारण को एक वैचारिक आधार शबार किया। पर चारत में विचारी बातवारों को पूर्व कर एक सार्राय नीति मोता पक्त स्वर्धीक इसने प्याप्त विद्यात होग्लियों और विशोद किम सकता जा भी त्या होती के मानरे पक्षणित कर्यन्त उपन्या की सकता था। जब इस उन प्रमाणी को चर्चा करेंगे, विकार्ष सर्धामा में तर्मेन सरकार रहें भाव कर्माणी स्वीत नीता में सम्माणित करेंगे की स्वीत स्वरूपन के स्वीत सरकार ने

25.4.1 **बास बला**

विशेषा व्यक्ति समझ ने बेला में क्या के मान करते हैं। यह के समझ किया प्राप्त के स्वाप्त किया प्राप्त की स्वाप्त के स्वाप्त की हमाने की स्वाप्त की स्वाप्त

िक्तां के ब्यू की कुटकी पूर्वक "एवं कुटक है जिहें हैं। हिर्फुट एवं प्रिक्तिक बोर्च के किए हैं। विकास के प्रतिकृत के प्रत्य के बार को किए का किए के बार के किए की हैं। है किए किए के प्रतिकृत्व के बार के बार के कार कर के बार के

हत्यामा का चकन का प्रशास करता है, तो काई बन आगराय नहां हत्या है। अंततः 1802 के ब्रीविनियम IV के रूप में एक कानून बना और बाल हत्या पर पास्ती सन्ता से नई।

सभा था गढ़। बात इत्या पर राजनी सनने से बंबान पर इतका कार्ये अंतर हुआ और चनात के नीब के इसाथ प्रतिपोध भी नहीं हुआ। अवेजों को इस प्रचा को तकार्यी से तथाना करने में १९४५ इस्ट्रीसर फिसी दिक्कत का कामना नहीं करना पता क्योंकि एक तो यह बंधान पर मीर्ताच्या थी और इसने इसे ब्राधिक अनुमान नहीं बातन थी। यर द्यारत के सुमरे हिस्सों में की इस पायदी का कोई साम इमाम नाति पहा और का इस्ता पायी के कन्यून नाति पहां मान इस्ता प्रोत्ती की हमाना इसनीय अधिकारीयों और विश्वतर्गायों ने में। पीटनी मी एवं नात नेते के साह ही मतार्थ जरहान ने अपनी नतिमृति की और यह भी ओक सवाकर देश क्रिया हमाने कोई पायदाती में कोई निर्माण

25.4.2 सती प्रथा

इसके बाद निश्चन को जनाने की प्रधा वा नारी प्रधा को रोकने के लिए करम उठाए गए। भारतीय बच्चितक कीवन में यह दुगरा महत्त्वपूर्ण हराकोर था। 19वीं शताब्दी के आरोव से नारी तीन प्रीमोरिक्सों में यह प्रधा पैनी हुई मी, पर संपत्न के निश्चने दिवसे में यह एमा अधिक जनकर की और नार्म के इस "परिता" की जावार सकर मिलारी की।

from the state of many states or worth salarly

Pedrave	करशामें भी संक्रम
wintered	3379
Market.	406
शृंशंशाचार	198
WENT .	425
WHICE	875
MAN.	140

विध्यानों को जनाने भी प्रणो जैसन कांड्यानों तक ही सीधित नहीं भी, सीव्य यह अन्य आतियों के बीच भी उपनित्त की उपके सामग्री कुल कर्ताव्या को महरे-तम्बर एको हुए कांडी कुल की स्वाधान कर प्रतिकार कर पर कांड्यान्याक्य मा अपने के बीक से 25,000 के अकार लोग गर गए। उस वर्ष बंगाना के हिम्मे में 63 विध्यानों को जमारे भी मूचना 1755 में ही अरोनेक्टन ने यह सामित करने की मोदियारा भी भी, हैं सारी पुरुष्त प्राथमिक

सैरिक जरमपा के अपून्य नहीं है। हामांकि कामी पाने से ही नहीं प्रचा की सुरस्त पदनार होते भी, पर आधार, कामीपर, एवं अपरास्त, मताप्र सरादार अहरमावार, मेराना, जोती के कामीर सोवा की पूर्ववानी जानाओं ने पत्र प्रचा को होतास्त्रीता कि और इसे देखेने की केरीवार की। 1948 तानाकी तक एन आधारीय प्रचा को देखेंगे बढ़ कोई साहत होते रही प्रचान नहीं किस साहत होता की अधारीत करा मतीया क्रमीपादी ने अपने कीरावार और में स्था

प्रचार पार्थिक नाम रिया, जबकि क्रांत्रका मुझेम कोर्ड में इसे केला साहर के एक रिया में प्रतिमिक्ति किया : इस प्रचा के बीच नावार के इस्टिक्श्म वह पात्र कृत वह वहां वहां के स्वताह है। शाहरणाव के क्रांत्रपट सुक में 1759 में वाही प्रचार पार्थिक नाविधा : इस प्रचा का मार्थर कारणा कर्यवाहित के उनकेल करते हुए राजि रिया में प्रतिमिक्ति कर्यों के स्वताह के स्वताह करते का स्वताह के प्रचारों के प्रीता कारी-वाहण महिला पूर्वित क्यावर्ड का स्वताह है, पर एक अध्यावीय प्रचा पर काम अब्द के प्रतिमा कारी-वाहण महिला प्रचार का प्रचार के स्वताह है, पर एक अध्यावीय प्रचा

रस्पात्मक तरीका स्वरापार्थ के बना किया और कहा कि मीची में इस इच्चा को प्रीवर्ध बन्ध अपूरोध कर किया जाए। 17% में कियानूपर में का स्वराध कर में का मान विश्वस के बनाए कामें में रोजा ! जो भी नवर्षन व्यवस्था में निर्देश काया हुआ कि स्वरूप करे चीड़ आक की मीठा बण्यार्थ नाए। किशानक की से नेतृत्व में में सामग्र विवाद में का स्वरूप से सामग्र के इसको में विवास

विशिधान कीर के नेतृत्व में सेराज्यर मिशानरी ने बनावता के आक्षामा के इसावे में विधान वहन वर मवेंबान किया। कीर ने फोर्ट विशिधान कोनेल में कार्यता पीठतों की आहातका की, उन्होंने हिन्दु सामनों में कही से सम्बद्ध स्थानांच्युं बन्दु दें भी 1 इन व्याविधायी का अध्ययन करने के बाद और तब निकार पर चांचा कि तिया प्रार्थ में को का क्षामा निर्माण कार्या म ही इसे बाबगी करार दिखा है। इसने बाद की ने मही पना परे मध्यन करने के निवाद केरतियों के पाम एक कारण सेना। 1805 में नेमानी ने निवादित कारोजन के नावादियों को बाद पाम एक कारण सेना। 1805 में कारा का ती कार्य हुए वर्ष पर काराधीत्र की। मध्यक्रमा को परिवादों में कहा ऐपाम दिखा कि वाबारानी मही होने के लिए किसी विकास को नवराई किए को की नावादीत्र को दी का बाताई। मध्यक दें हम कारण स्वी की में परदास्त्र की कार्य करायों की नावादीत्र की की कार्या कार्य के स्वाप्त की स्वाप्त की स्वाप्त की स्वाप्त की की मों परदास्त्र की कार्य कारण के नावादीत्र की कार्या की है। तीद हमें मध्यन्त करने का

मोडी-की हिप्पिक्काइट के बार 1813 में मरकार ने यह तम किया कि 16 वर्ष में कम उध की विश्वक को नहीं नहीं होने दिख जाएना । इसके कीतीरका जिस विश्वक का सकता तीन साम से होतर हो, उसे भी सनी होने की अनुसनि नहीं ही जाएना। गए अगर कोर्ड उस सकते की जिसकी हो ने की है. जो का इस विश्वक में नकता है जाएनी

1810 और 1821 में से स्पीम करें जाने ने मारी प्रकार को सक्तान करने का उन्तरीत दिस्ता (अमेरी करों क्षा कि कर करना में अक्तानिक कर को उन्तरीत करना करने कि कियों प्रकार का अन-विरोध मारी होगा। सरकार ने एक मार्च को दूसरा दिसा। 1821 में मार्च विरोधन ने नहीं पूर्ण में पूर्ण मार्चा के का अन्योग को ना अनावोग की व्यक्ति करना पितरों के करने मार्चीवार कर दिस्ता। होगिया का उत्तराधिकारी कार्य प्रकार की कार्य प्रकार के करने मार्चीवार कर दिस्ता। होगिया का उत्तराधिकारी कार्य प्रकार कार्य कर कर इंडिया करना करने के विरोधन कर कार्य के कार्य कार्य कार्य कार्य करना करने करने करायोग्ध विराधीओं पर तनकार जाना कार्य पूर्ण | क्षामाई करकार और दिस्ती में कार्य के व्यक्ति

हमी तरफ देशार्थ निवासिंगों ने बिरोन को लोक समाज कर व्याप वाती हमा सैसी कुम्बा की और सामृत्य किया और अपनार हात कर पर मित्रातिक ग्रेक समाजे की आपनास्थात पर बार विद्या अपने मारात स्थापन के मात्र के साम की स्थापन में निवास की स्थापन स्थापन क्षार्थ करने का निवीस विद्या । आपना और विद्या में का मुख्य की समाजित के लिए उठाने अस्त्रात्वों के स्थापन प्रशासिक की

25.4.3 वास प्रथा

स्थितिका राज्यान के सीराम स्वाप्त के प्रश्नीतन ताल प्रधा कर भी स्वाप्त किया नक्षा भारत के साल क्ष्म प्रकृति के शीवना के कर में उपनिष्म सी 1983 में स्वयूक्त प्रश्नात की क्ष्मीताल की राज्यानिकी के स्वाप्त आर्थिक प्रश्नात और प्रधार दिखेला क्षेत्रती के स्वाप्त की स्वाप्त की स्वाप्त के साल प्रधार की प्रधान की स्वाप्त की स्वाप्त की स्वाप्त की सीराम की सीराम की सीराम प्रधान की साल प्रधार की प्रकार की साल की सीराम की सीराम स्वाप्त की सीराम की सीराम की सीराम सीराम की सीराम क अन्य यो शिवर्रिक्तमें से जनव महात में जूनि नांचती दास क्या महत्त्वपूर्ण की। इन प्रदेश के कृषिण उत्पादन में इन प्रकार की दान प्रचा नार्द जाती थी। नानाचार, कृते और कनारा में मूर्ति नांचती दास क्या ग्यापक रूप में पैन्ही इस्

त्ता अभ के उन्मृतन में भी भारत हरकार रातस्तरील की वीति अभवाती होते। 1774 ई. मैं ही सरकार का ध्याद हम जो स्वान्य करा दिवा क्या । किवारपोर्ध के हेन्द्र में अपने-पान नोबंदी होता है अपने के केन्द्री में में तर्दा के प्रधान प्रधान प्रधान की स्वान्य की होता की स्वान्य का ध्याप प्रधान में अपने प्रधान प्रधान में जो रातमूच का प्रधान प्रधान हमा है हमा है है। 150 में ही किये त्याद प्रधान में प्रधान में मूच का प्रधान करने में मात्र में अपने का स्वान्य प्रसान सामा पर नामध्ये किया कि का एक शरोपार्ध अपने हैं। की बार्तिक मानूनांत्र प्रधान

(832 के चार्टर मीधिश्वम में मारत सरकार को बाजों को बाज स्पारने के निर्देश किए नज़ "जैसे ही यह गर्ग कि उपपार व्यवसारिक और कारों से मुन्त है और इस उद्देश के अपनुन मीर निराम का पुनर तीया किया वामा चालिए।" हम उद्देश्य के 1835 ई. में मार्गिय विद्या कार्य की स्पारण में गई। हमार्गिक प्रमाख्य

भाग पूर्व के 16,50 % - जा नामान स्थान कार्यात कर नामान्य कर में हा हाताब स्थान मून चार्य के महिता करता कर अपने कर करता कर महिता है। 563 में डा हम स्था निराधि निराधि तैयार कर तो। दियों कार्यान ने सरकर में आरोध निराधि करता कि स्थाने के क्षा महाने स्थानित कर कर का बाती जान करता के स्थानकी की स्थान कर स्थानकी की की दुस्ता दिया। 13.59 में बिक्कि मानेक में एक सरकर निर्माणक पेत्र किया, विश्वके सात्रीकक स्थानकी की

आरोपिक की रूप रहिल करने प्राप्त करना करने हुए के प्राप्त करने हुए हैं कि प्राप्त करने हुए के प्राप्त करने हुए के प्राप्त करने करने हुए के प्राप्त करने करने हुए हैं कि प्राप्त करने हुए के प्राप्त करने हुए के प्राप्त करने हुए हैं कि प्राप्त करने हुए के प्राप्त करने हुए हैं कि प्राप्त करने हुए है कि प्राप्त करने हुए हैं कि प्राप्त हुए हैं कि प्राप्त करने हुए हैं कि प्राप्त हुए हैं कि प्राप्त हुए हैं कि एक हैं कि प्राप्त हुए हैं कि एक हैं कि एक हैं कि प्राप्त हुए हैं कि एक है हैं कि एक हैं कि हैं कि एक है कि एक हैं कि एक

र्समद के दबाब में नाकर सिंध ताबोग को पुन: एक नाम कानून क्याने का आदेश दिया च्या। प्यरंतीय करकार ने इसे प्रतिक करने में सबसी कमने नामाया। अंतर्ता: 1845 के अधिनियम V द्वारा जारत में च्या प्रत्या की सम्बन्धित की नई।

राज प्रसा के उन्मूनन से शब्बद्ध को कानून कर अंबर काकी सीर्पात कर। यह काबून केवल शब्ब ही करता था कि बिरिश्त स्थापनक में जब शब्दों से कागर राष्ट्र कम को संबर्ध मूर्ति की जाएगी और कोई भी वरकारी पत्तीकार्य क्षा जन्मे चालिक के जल सीर्रान के विकर् किसी कल पर क्षाव नहीं वाल काकी।

25.5 अंब्रेज़ें की नीति और भारतीय प्रतिक्रिया: एक मृल्यांकन

जादर हैं कर गए विश्वाद-विवारों से जह सार्व रुक्ट होतर शावने आहि है कि भारतीय परवादाओं और संस्कृति के होति किटक इंक्टिकों में समीतार वरितानेन होता रहा। मार्गीय उपनिष्ठा के समूचा पर महातक की मुक्किय में सराहब और सारत सरकार की रुक्त मंत्रीय क्रिकीटिक इंक्टिकों में मार्गी की उपनीता है।

मारत की सामाधिक प्रथा और रेडिन-रिवानों में राज्य के हस्तप्रेण का मामृती तकर पढ़ा। जबाँक, और्पानेदेशिया करतर उत्तर पूर्व कोजनेक्टीरक एक्सीतिक ग्रांचे को करना चैने हो महत्त्रपूर्व प्रामाधिक करमानों की सुरुक्ता हुई। अरोखों कर-मुस्तकर पूर्व की प्रोमेशियक करते प्रथास करमुक्ता को एकसीतिक सांच्या नीर विशोधनीयकर सूर्व दिवानी जन्मी सामाजिक और नाजिपन तिमान से मार्किन थे। रितंता नामाजिक परिवर्तन कर नवसे भहत्वपूर्ण अन्य था। इसका प्रयोध बन्धार गए भीजीवदात से नकी ज्याना था। (रेकों इकार्य 21)

पारणास्य विश्वा प्रत्य अध्यक्षक संसानी बृद्धिनीयों वर्ष सरकार में शस्त्र की नीतियों पर बाहब करता था, मीतियन बाहणाने पर अध्यों विशिक्षण प्रस्त करता था और अध्ये स्टार पर सामाजिक पीत्रनेत्र के भी कीतियां करता था। पात्रकारण पात्र और सोत्रकण सैन्द वैसे बुद्धिनी बिटने में युद्ध विश्वास से प्रमाणित से और उनका इन्हें प्रात्रकार मा कि अध्योग अध्यक्त की कानकार करती था, पत्री के स्वार मा प्रात्रीक प्रमाण को बाहत प्रात्रीक प्रधान करता और क्षेत्र

विशानीकों प्राय मार्गांसी से धर्म गीरकार्य के कारणों को विरोध किया। प्राथमित कर पार्ट में मीर्ट्सियों में में स्वात्मार की स्वात्मार की स्वात्मार की गार्टिय पार्ट में ने नोनी मी प्राप्त कर कारण गा. किया मित्र पार्ट में मार्ग्य कर में प्राप्त में इस प्राप्त मार्ग्य मार्ग्य कर कारण गा. किया मित्र पार्ट में मार्ग्य मार्ग्य में मार्ग्य कारण प्राप्त में मार्ग्य मार्ग्

फोद दिया। इसके बाद यहां के लोगों ने ही सामाजिक मुखार के प्रयत्न किए।

 बारेन हीरटेम्ब के शामन करन के कर बीपनिवेशिक सामानिक नीति में नाने बाने परिकर्तनों के क्रारचों का क्रानेख करें।

 क्षति प्रचा, चाल तल्या और वाल प्रचा के संप्रणे में ब्रिटिश नीतियों के विकास और प्रधान पर प्रकार वाले)

25,6 सारांश

इस आधा जरते हैं कि हा चारों को पहलर जारने घरता में बंधे की सामांत्रक सीधे को प्रभोग बाने माने देखाँदिन की पीकित करते की आवशहर हाएन करते होती है। बार प्रभावती, दिशानीचों और भारत के स्थान ने हाता के के अधार में आज प्रभावती करता की साम्य पहल बाराबर ने बाही सामांत्रकी हाता हारा की पात्रविक हाता में मानांद्रकी हिक्स। पर इन सीधीयों का नवें बाता प्रभावती की पात्र में बाराबी की होता में प्रभावती की हाता है। जाता की पार्टी का प्रभावती की मानांद्रकी की प्रभावती की होता में प्रभावती की हाता है। अपना में की 1857 के बार यो जान-बासन औरनेनीशास संप्यास के स्वास्त करा

25.7 बोध पश्नों के उत्तर

क्षेत्र प्रश्न ।

ter and a mendion feature

1) देशे आग 25.2 2) तेशे आग 25.3

वेसे भाग 25.

क्षेत्र प्रश्न 2

 आर वान 25.3 और 25.4 से नुष्या प्रस्टूटी कर सकते हैं और किर उनकी आपस में नुसंया कर सकते हैं।

2) वेले भाग 25.4